ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

मुगल प्रशासन की सिक्खों के प्रति विफल नीतियाँ

सिक्ख इतिहास, भाग-दूसरा

लेखक : स. जसबीर सिंघ
क्रांतिकारी जगत गुरू नानक देव चैरिटेबल ट्रस्ट, चण्डीगढ़

Websie:www.sikhworld.info
or
Websie:www.sikhhistory.in

नोट : यहां दी गई सारी जानकारी लेखक के अपने निजी विचार हैं। यह जरूरी नहीं कि सभी लेखक के विचारों से सहमत हों।

मुगल प्रशासन की सिक्खों के प्रति विफल नीतियाँ

जब तथाकथित बन्दई और तत्व खालसा में एकता स्थापित हो गई तो स्वयँ को पुन: लामबद्ध करने लगे । उन्होंने श्री दरबार साहब के केन्द्र मान कर यहीं अपनी सैनिक गतिविधयाँ प्रारम्भ कर दी । प्रशासन को इस बात की चिन्ता सताने लगी कि कहीं सिक्ख पुन: कोई नया आन्दोलन न चलायें जो उनका स्वतन्त्रता संग्राम हो । अत: समय रहते इनका दमन करना चाहिए । यूँ तो वह सिक्खों की शक्ति क्षीण करने में कई प्रयास कर चुके थे । पहले सशस्त्र सिक्ख युवकों को अपनी सेना में भर्ती कर लिया था, दूसरों को भत्ता देकर निष्क्रिय कर दिया था और बाकी राजपुताने जाकर स्थानीय सेना में भर्ती हो गये थे । अत: उनकी दृष्टि में अब उत्पात करने योग कोई बाकी न बचा था । परन्तु नई परिस्थितियों में सिक्ख युवक संगठित होकर बहुत से छोटे छोटे समूहों में विचरण कर रहे थे । सिक्खों का समूहों में घूमना मुगल सत्ताधारियों को एक आँख न भाया, वह सिक्खों के अस्तित्त्व को ही मिटा देने का लक्ष्य लिए बैठे थे । अत: वे लोग राज्यपाल अब्दुलसमद खान को बार बार अमृतसर नगर पर आक्रमण करने की प्रेरणा दे रहे थे । जबकि अब्दुलसमद को अहसास हो चुका था कि ऐसा करने से पुन: गृह युद्ध छिड़ जाएगा क्योंकि सिक्खों ने बदला लिए बिना नहीं रहना । यदि एक बार गृह युद्ध शुरू हो गया तो पूरे प्रान्त में पुन: अराजकता फैल जाएगी और कानून व्यवस्था छिन्नभिन्न होने में जरा भी देर नहीं लगेगी ।

दरबार साहब में भाई मनी सिंह जी ने गुरू मर्यादा प्रारम्भ करने में सफलता प्राप्त कर ली थी । अत: वह प्रत्येक क्षण सिक्खी प्रचार में लगाने लगे थे । उनके प्रचार के प्रभाव में आकर अनेकों युवकों ने अमृत धारण करके केशों वाला न्यारा स्वरूप धारण कर लिया, जिससे केसरी अथवा नीली पगड़ियों वाले युवकों के समूह दिखाई देने लगे । इन युवकों में मोहकम सिंह नामक युवक भी था जो उन्हीं दिनों भाई मनी सिंह जी से प्रेरणा पाकर सिंह सज गया था । वह युवक अमृतसर के गाँव ओहरी के निवासी चूहड़मल का छोटा पुत्र था । इसका बड़ा भाई रामजी मल विरोधी विचारों वाला व्यक्ति था, उसे सिक्खों से द्वेष था । भाइयों के बँटवारे में राय जी मल ने टुंडासर ग्राम वाला फलों का बगीचा हथिया लिया था । मोहकम सिंह ने अपने जत्थे

के लिए कुछ फल भाई से माँगे परन्तु उसने देने से साफ इन्कार कर दिया और कहा – मैं बगीचे के फल सिक्खों को देकर उन्हें पलीत (अपवित्र) नहीं करना चाहता । बस फिर क्या था, युवकों का यह दल इस भारी अपमान को सहन नहीं कर पाया और उन्होंने बलपूर्वक फल तोड़ लिये और कहा – जा ! जो कुछ करना है, कर लेना । इस पर रामजी मल सीधा लाहौर गया और वहाँ पर राज्यपाल अब्दुलसमद खान को मिला । उसने बात को बहुत बढ़ा–चढ़ा कर बताया और सरकार को सिक्खों का दमन करने का आग्रह किया और कई बार के दबाव भी डाले, यदि सरकार हमारी रक्षा करने में असमर्थ है तो हम लगान नहीं देंगे, इत्यादि ।

अब्दुलसमद खान ने वैसाखी के पर्व के मद्देनजर रखकर एक विशाल योजना के अन्तर्गत लाहौर से शाही लश्कर अमृतसर को घेरने के लिए भेज दिया जिससे वहाँ आये सभी दर्शनार्थी भी धर लिये जायें और सिक्खों को मौत के घाट उतार दिया जाये । असलमखान के नेतृत्त्व में बड़ी संख्या में फौज ने वैसाखी पर्व पर अमृतसर को घेर लिया । पर्व के कारण दूर दराज से सिक्ख सम्मलेन में भाग लेने के लिए आये हुए थे । अत: दोनों पक्षों में घमासान युद्ध हुआ । मुगल सेना ने पाँच दिन तक नगर को घेरे रखा । अन्त में सिक्खों ने 'करो या मरो' का खेल प्रारम्भ कर दिया । इससे मुगल सेना के पैर उखड़ गये और उनका सहयोगी पट्टी क्षेत्र के चौधरी का दीवान (खजाँची) हरमा मारा गया और स्वयँ देवा घायल अवस्था में रण क्षेत्र से भाग गया । फौजदार असलम भी बुरी तरह पराजित होकर लाहौर लौट गया ।

इस विजय ने सिंहों के साहस को और बढ़ा दिया, वे सोचने लगे यदि एकता और मनोबल से शत्रु का सामना कियाजाये तो क्या नहीं किया जा सकता । इस विजय ने जहाँ सरकारी लश्कर की मर तोड़ दी वहीं सिक्खों के हाथ बहुत से घोड़े व अस्त्र–शस्त्र लगे ।

लाहौर के राज्यपाल अब्दुल समद खान इस पराजय के अपमान को सहन नहीं कर सका । उसने सिक्खों को रोंध डालने की कुछ नई योजनाएं बनाई और उसके अन्तर्गत कुछ विशेष निम्नलिखित आदेश जारी कर दिये –

1. जिन लोगों को बन्दा सिंह के समय उसके सैनिकों द्वारा किसी भी प्रकार की क्षति उठानी पड़ी है, वे अपने दावे स्थानीय फौजदारों के समक्ष प्रस्तुत करें । प्रशासन उनके दावों के बदले में सिक्खों की सम्पत्ति कुर्क करके अथवा नीलाम करके सभी मुआवजे पूरे करेगा ।

2. जो लोग उस समय नागरिकों की हत्या के दोषी पाये जाएं तो उन पर मुकद्दमा चलाया जायेगा ।

3. जिस हिन्दू परिवार का कोई सदस्य सिक्ख बनता है तो उसके माँ बाप को दण्डित किया जायेगा ।

उपरोक्त अध्यादेशों का ढिँढोरा गाँव गाँव में करा दिया । बस फिर क्या था, लालची लोगों ने सिक्खों की ज़मीनें और उनकी सम्पत्ति हथियाने के विचार से हजारों दावे और मुकदमें स्थानीय फौजदारों के पास पेश करदिये ।

ऐसा कोई सिक्ख परिवार न बचा, जिस परदो चार दावों का पर्चा दाखिल न किया गया हो ।

इस समय सिक्खों की सुनने वाला कोई न था । अंधे प्रशासन ने झूठी गवाही के आधार पर सभी सिक्खों की खेती बाड़ी जब्त कर ली और कोढ़ियों के भाव सम्पत्ति नीलाम कर दी । मुआवजा पूरा न होने पर घर का समान अथवा मवेशी छीन लिये । कई सिक्खों को झूठी हत्याओं के आरोप में बन्दी बनालिया । जिस सहजधारी सिक्खों के बेटे केशाधारी सिक्ख बने थे । उनका अपमान किया गया और उनको दण्डित भी किया गया ।

इसके अतिरिक्त जो सिक्ख सरकारी सेना में भर्ती किये गये थे, उनको दूर दराज सीमावर्ती क्षेत्रों में तैनाती के लिए भेज दिया गया । जिन वृद्ध निहंगों को भत्ता देकर किसी प्रकार के आन्दोलनों में भाग न लेने के लिए कहा गया था, उनका भत्ता समाप्त कर दिया गया और जिन सिक्खों को लगान क्षमा का वायदा करके खेती करने के लिए प्रोत्साहित किया गया था, उनकी भूमि छीन ली गई ।

जब बहुत से बन्दी बनाये गये और सिंहों की हत्याकर दी गई और कइयों को यातनाएं देकर इस्लाम स्वीकार करने पर विवश किया गयातो प्रभावित सिक्ख परिवारों ने तुरन्त राजपूताने के नरेशों के पास नौकरी कर रहे अपने निकटवर्ती जवानों को सूचना भेजा कि वह तुरन्त अपने माँ बाप अथवा परिवारों की सुरक्षा के लिए कोई उचित कार्यवाही करें । यह दुखांत सूचना सुनते ही समस्त सिक्ख सैनिकों ने छुट्टी अथवा त्याग पत्र देकर अपने घरों की राह ली।

उन्होंने मिलकर आगामी खतरों से खेलने के लिए, पूरे पँजाब प्रान्त में गोरिला युद्ध के सहारे आतंक फैलाने का निर्णय लिया और रास्ते में महाराजा आल सिंह के पास आकर अपनी करूणामय दास्तान सुनाई । इस पर सरदार आला सिंह जी ने उनको यथाशक्ति अस्त्र शस्त्र अथवा धन इत्यादि देकर आश्वसन दिया कि वह सदैव उनके साथ है और समय समय परहर प्रकार का सहयोग दिया जाता रहेगा । बस फिर क्या था ?वे सामुहिक रूप में अमृतसर पहुँचने के लिए चल पड़े, परन्तु प्रशासन को समय रहते उनके अपने का समाचार मिल गया । व्यास नदी पार न कर सके, इसलिए प्रशासन ने मुख्य पतनों पर कड़े पहरे बिठा दिये । किन्तु सिक्खों ने छोटे छोटू समूहों में आकर उपल क्षेत्रों से नदी पार कर ली और वे निर्धारित लक्ष्य को लेकर विभिन्न विभिन्न क्षेत्रों में अपने शत्रुओं पर टूट पड़े । सभी सिक्ख एकता के सूत्र में होते हुए भी 100 अथवा 200 जवानों की टुकड़ियों में गोरिला युद्ध लड़ने लगे, इसलिए ये लोग शाही लश्कर की झड़पों से बचने के लिए घने वनों को अपना आश्रय स्थल बनाते । शाही लश्कर ने ऐश्वर्य का जीवन जीया हुआ होता था, वे लोग बिना साधनों के झाड़ीदार काँटों वाले जंगलों में घुसने का साहस नहीं कर पाते । यदि किसी मुगल फौजी टुकड़ी ने सिक्खों का पीछा किया तो वे बुरी तरह पिटी । उसका कारण यह था कि सिक्ख स्थानीय क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति से परिचित होते और वे झाड़ियों में छिप कर आँखों से ओझल हो जाते । जब शत्रु उनका पीछा करता हुआ अकेला पड़ जाता तो वे फिर से शत्रु पर आक्रमण करदेते । इस प्रकार घने जँगलों में सरकारी सेना झांसे में फंस कर मारी जाती । धीरे धीरे सिक्ख गोरिला इकाइयों ने घने वनों के भीतर अपने स्थाई अड्डे बनालिये और वे उन लोगों को चुन चुन कर मौत के घाट उतारते । जिन्होंने उनके घरबार नीलाम करवाए थे अथवा खरीदे थे । इसके अतिरिक्त उन सभी सरकारी अधिकारियों को समाप्त कर दिया जिन्होंने उनके किसी प्रियजन को यातनाएं दी थी अथवा बन्दी बना कर मृत्यु दण्ड दिया था । इस घमासान में पूरे पंजाब प्रान्त में तहलका मच गया । बहुत से डरपोकों ने स्वयं ही बहुत सी सिक्खों की सम्पत्ति वापस लौटा दी। इस गृह युद्ध से जहाँ सरकारी तंत्र छिन्न-भिन्न हुआ, वहीं कानून व्यवस्था अस्त-व्यस्त हो गई । इस समय का लाभ का उठाते हुए कई समाज विरोधी तत्व लूटमार करने निकल पड़े । जिस कारण जन साधारण में असुरक्षा की भावना बढ़ती ही चली गई । गाँव-देातों में अंधेरा होते ही स्थानीय लोग अपने द्वारा बनाई गई समितियों द्वारा अपने अपने गाँव की सुरक्षा के लिए पहरा देते । परन्तु वे

बड़े पैमाने पर होने वाले आक्रमणों के सामने टिक नहीं पाते । जब तक सरकारी सहायता उन तक पहुँचती । आक्रमणकारी अपना काम करके अदृश्य हो जाते । दूसरी तरफ मुगल सेना का मनोबल भी हर रोज के खून खराबे में टूट चुका था । वे भी किसी न किसी रूप में शक्ति चाहते थे क्योंकि प्रतिदिन उनको भी जान–माल दोनों प्रकार की भारी क्षति उठानी पड़ती थी ।

इस अराजकता भरे वातावरण में व्यापार और खेतीबाड़ी पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा। स्थान स्थान पर खाद्य पदार्थो का अभाव देखने को मिलने लगा । काल जैसी सिंिति चारों ओर दिखाई देने लगी । सरकारी खजाने खाली होने लगे । कई से भी लगान इत्यादि प्राप्त होने की सम्भावना समाप्त होने लगी क्योंकि लोग आतंक के भय से खेती बाड़ी छोड़कर प्रान्त से पलायन करने में ही अपना भला देखने लगे ।

जब राज्यपाल अब्दुलसमद खान को अपनी नीतियाँ बुरी तरह असफल होती दिाई देने लगी तो वह फिर से शान्ति स्थापित करने के लिएसिक्खों को मनाने के लिए प्रयत्न करने लगा । उससे समस्त सिक्खों के विरूद्ध जारी अध्यादेश वापिस ले लिये और अमृतसर में श्री दरबार साहब के दर्शनों पर लगा प्रतिबन्ध भी हटा लिया और घोषणा कर दी कि साधारण सिक्ख नागरिक सामान्य रूपमें खेती बाड़ी इत्यादि के कार्य करते हुए अभय होकर रह सकते हैं ।

यह मुगल सत्ताधारियों की बहुत बड़ी पराजय थी परन्तु अब बहुत देर हो चुकी थी । सिक्खों का मुगलों से विश्वास उठ गया था । वे अब किसी झांसें में नहीं आना चाहते थे और उन्होंने जीवन जीने की नई राहें चुन ली थी । अब उनका लक्ष्य सत्ता प्राप्ति का था । वे अब किसी स्वतन्त्र क्षेत्र में अपना साम्राज्य स्थापित करना चाहते थे । उनको अपने गुरू के वचन यादआने लगे थे कि एक समय आयेगा जब सिक्ख अपनी किस्मत के स्वयँ स्वामी होंगे, इसीलिए प्रत्येक सिक्ख युवक गुनगुनाता था – 'राज करे गा खालसा, आदीरहे न कोय' ।

नई परिस्थितियों में सिक्ख युवकों ने अपने हथियार नहीं त्यागे । वे तो पक्के सिपाही बन चुके थे केवल समय का लाभ उठाने के लिए उत्पात करना त्याग दिया और फिर से अपने केन्द्रिय स्थान अमृतसर में एकत्रित होने लगे । इस बीच बहुत से मुगलों द्वारा सताये गये युवक केशाधारी बनकर इन सिक्ख सैनिक टुकड़ियों के सदस्य बन चुके थे ।

जब सशस्त्र सिक्ख युवकों के काफिले हथियार फैंकने पर सहमति न कर पाये तो प्रशासन ने दोहरी नीति बनाई । इस नीति के अन्तर्गत शान्तिप्रिय सिक्ख नागरिकों को किसी भी प्रकार से सताया नहीं जायेगा, केवल उग्रवादी शस्त्रधारी चुवकों के काफिलों का ही दमन किया जायेगा । परन्तु इस सरकारी नीति पर कोई सिक्ख विश्वास करने को तैयार न था । उन्हें मालूम थाकि इन सत्ताधारियों का कोई दीन-धर्म नहीं है । वह लोग पल पल अपनी बात को स्वयँ ही काट कर झूठी साबित कर देते हैं और इनके वायदे केवल छलावा भर ही हैं । अत: सिक्ख युवकों के काफिलों ने अपनी शक्ति बढ़ाने के लिए कई जेलें तोड़े दी और वहाँ पर कैद सभी बन्दियों को अपना साथी बना लिया । कैदियों की सूचनाओं के आधार पर उन सभी हिन्दू व मुसलमान सरकारी अधिकारियों पर हमले शुरू कर दिये जो कि अत्याचार करने में अगली पंक्तियों में थे । सिक्खों की इस प्रकार की कार्यवाही से तंग आकर मुगल सम्राट मुहम्मदशाह ने पँजाब के राज्यपाल अब्दुलसमद खान को कमजोर प्रशासक जानकर स्थानांतरित करके मुलतान प्रान्त में भेज दिया और उसके स्थान पर पँजाब का नया राज्यपाल उसी के पुत्र जक्रियाखान को नियुक्त किया । इसकी नियुक्ति सन् 1726 में हुई । यह अपने पिता से कहीं कठोर और जालिम था ।